[illegible]- 93

'काव्यांजलि' पद्य संग्रह

पाण्डुलिपि- 02

कालीकान्त झा बुच

ग्राम- करियन

थाना- रोसड़ा

समस्तीपुर

KALI KANT JHA 'BUCH'
MAITHILI POET
Village - Kariyan
P.O. Kariyan
Block. Shivajinagar
Samastipur Bihar
PIN - 848117

श्रीगणेशाय नमः

जय दुर्गे! गीत - 1

सर्वेश्वरि दुर्गे, बुद्धि दहक जनकें तों, हरहक जनक अज्ञान
माइ हे, तोरे मे जग भगवान!

पहिने तों मेटि दहक मोनक विभेद बुद्धि
भ जाइत तदुपरान्त सहजे मे आलोक बुद्धि
कपट दंभ-अहंकार स्वार्थ देह कें सिहरि
कारहक जगक उद्धार ॥०॥ माइ हे ००००००००० -

शिवक तेज आनन, चतुरानन सँ चरण भेल
विष्णु बाँहि सोमस्तन, इन्द्रतेज डाँड़ देल
यम केश, वरुण जाँघ, पृथ्वी नितम्ब भेल
वसुगणक अंगुलि निर्माण ॥००॥ माइ हे ००० - -

नासिका धनाधिपसँ, प्रजापति क दंत श्वेत
आगि सँ त्रिनेत्र, साँझ-भौंह वक्रता समेत
वायुदेव कानदेल, एहि तरहें प्रगट भेलि -
नारि एक सुरुज समान ॥०॥ माइ हे ०००० -

हरिवितरु शंकर त्रिशूल सँ त्रिशूल देल
विष्णु क सुदर्शन सँ चक्र अपन जनमि गेल
धर्मराज दंड, वरुणपाश, प्रजापति देलनि -
स्फटिक क माला महान ॥०००॥ माइ हे ००० -

सलिलदेव शंख, काल ढाल करवाल देल
ब्रह्मा कमंडलु, हुताशन सँ शक्ति लेल
वायु धनुषबाण, सूर्य तेज, इन्द्र कए देलनि -
घंटा ओ वज्र क प्रदान ॥०॥ माइ हे —

P.T.O.

गीत·1 (शीर्षक)

क्षीरोदधि दिव्यवस्त्र, चूड़ामणि श्वेतहार
कुंडल केयूर आ शुभ्र हड़·छड़· सिंगार
विश्वकर्मा फरसा, अनेक अस्त्र शस्त्र एक
कमल माल देल अम्लान ।।००० माइ हे — — —

नागराज मणिमंडित उग्र हार दिव्य देल
धनपति सँ पूर्ण मधुक पान पात्र प्राप्त भेल
हिमवानक देल सिंह वाहन पर शोभित तैं
तोहर जनि वस्तु के आन ? ०० माइ हे — — —

कऽ रहली व्योम बीच रहि रहि अट्टहास
गर्जन क गुंजन सँ फाटि रहल छै आकाश,
डोलल पहाड़, काँपि उठलै समुद्र सकल,
उठि गेलैक भारी तूफान ।।००।। माइ हे — — —

देवें मे आरती आ पौंजि मे छह मिलैक
सिंह वाहिनी भवानि, हरहक संततिक शोक
जाइ जाइ माँ, उर्गे, तौं त्रिदेव शक्तिपुंज
कहिया लेमक निदान ? ।।०।। माइ हे —

— ० —
इति

कालीकान्त झा बूच
ग्राम· करियन
समस्तीपुर (बिहार)

Monthly Summary

PARTICULARS	DATE
श्री दुर्गादेव्यै नमः	③

गीत - 2

सुतलि कतहिया मैया, लागल केवाड़ गय?
जागह जागह हय, कहिया कऽ बह उद्धार गय?

~~[illegible]~~ मधु कैटभ-महिषासुर घातिनि
धूम्रलोचन, चण्डादि निपातिनि?
बीजक शोणित सुर पायिनी,
शुंभ निशुंभ शांति दायिनी,
पसरल ~~फेरो~~ अधलहिया आसुरी अन्हार गय?
जागह, जागह हय, कहिया कऽ बह उद्धार गय?

सौम्ये, नंदिनि, अतिभयंकरी
रक्तदंतिके, माँ, अयोनिजे
ताकह हे शताक्षि संतति के
शाकम्भरी मैया ज्योति के,
तोरि सँ केलौ कहिया, उगत संहार गय?
जागह ० ० ० ०

भीमे, भ्रामरि ते, अम्ब नन्दिके,
अरुणनाशिनी सावित्रिके,
आज चाह कहीं जे हे तो
रक्षा करू अहीं पार ए तो
त्रिशूल उठाऊ पहिया, लेइल अवतार गय? — —
जागह — — —

Monthly Summary

(4)

PARTICULARS	DATE
(5) महिमा तेरो महान चाँदको	
कहु कते गुणगान मैं किसे,	
मोम मोहा कुहू कवैत आई	
जो कुआँ तोर [illegible] लगाई	
~~हमरु बेटे, नहि बहिया, [illegible] [illegible] वि~~	
~~नागाई o o o o o o~~	
तनि मरिद बेटे बहिया, कहुक किनागया।	
नागाई - नागाई — —	

श्रीगणेशायनमः

गीत ३

हम सभ कते काल सँ नदी कातही ठाड़ औ
पहुँचाबू ओहि पार औ ००० ०००
संग मे नव नौतुन परिवार, खढ़ खेढ़ गंगाजी को धार
केवट पकड़ू पकड़ू अपने सँ पतवार औ ००० पहुँचाबू ---

चिन्हलौं चिन्हलौं औ लोका, मिथिले आयल राजकुमार
सुनलौं चरण-कमल मकरंद चमत्कार औ ००० पहुँचाबू -

लागल फेर चरण मे धूरि, छुबिते नैया जैते उड़ि
पालब कहू कोना कोन तखन अपन परिवार औ ।। पहुँचाबू -

पहिने नाव अपन धोआउ, तखन पार लगाउ जाउ
अपने जे चाहै छी उतराइ दिनदेवार औ ।। पहुँचाबू -

सुनिते प्रेम भरल बात, प्रभु के सिहरल लागल गात
पखारै मैया गुरुजी, मन के मारि उदास औ ।। पहुँचाबू -

18
19

कुलेक्षल मन उछलल आनंद, चरणक पर कनाक नकाउँ
अद्भुत आदर मिथिले मेल सकल उद्धार औ ।। पहुँचाबू -

इति

१ ऊंवडूवा १८-५-८३

कार्तिक ... १ माघ ९५

(गीत) (४ मई)

ज्ञान, विचार, भक्तिभावक भंडार अप्पन मिथिला।
भोग बीच योगक निर्मल संसार अप्पन मिथिला॥१॥

ई रहस्य केओ पौलनि।
जे त्रिभुवन मे वास कहौलनि।
~~सिंहासन पर कुशक आसन~~। ऊँ मैथिली अपरा माया।
~~मर्यादा शासित हाथ प्रशासन~~ को (अविकृत) वनली आया
~~...~~ अद्भुत चमत्कार अप्पन मिथिला।
भोग बीच योग क निर्मल संसार अप्पन मिथिला॥२॥

शुकदेवो ई महिमा जनलनि।।
परमगुरु जनक कैं मनलनि।॥
भोगी कैं देहो क मोह नहि।
योगी ताकथि तृष्णा रहि रहि॥

धरतीकी, आकाशो केर शृंगार अप्पन मिथिला॥
भोग बीच योग क निर्मल संसार अप्पन मिथिला॥३॥

जे सदैव जग कैं नचबैं छथि।
आदि शक्ति माया कहबैं छथि॥
सुख से बनली तिरहुतनी।
भूमि लोटि कऽ भेली भूतनी॥

ताहि को केलनि रचि रचि कऽ शृंगार अप्पन मिथिला।
भोग बीच योग क निर्मल संसार अप्पन मिथिला॥४॥

गौतम कपिल कणादि अयाची।
उदयन सन आचार्य भेल छथि॥
मंडित हमर कर्म शास्त्र सँ,
ज्ञान क पंडित भरि गेल छथि।

न्याय दर्शनक सबसँ पैघ रखबार अप्पन मिथिला॥
भोग बीच योग क निर्मल संसार अप्पन मिथिला॥

(प्रकट — २१ अगस्त ...)

(7)

श्रीगणेशायनमः
गीत - ५
अत्याज्य विषय
तोहर ठोर

प्रकाशित
२६ मार्च १९८८

कि जहिना कुरकुर पान क कोर।
कि तहिना सुन्दरि, तोहर ठोर॥

लगौने छह बात क पाथर-चून।
सजौने छह कथ कपोल कखून!
रहल छह रङ्गके चीन क चूक,
कतेऽ छह प्रेमक पुंगी-टूक २॥

कि जहिना लाली पसरल भोर॥ कि तहिना ०००००००
देखिकऽ उहरल हमर करेज।
त्यागि अयलहुँ उदयाचल गेह॥
अहाँ बिनु व्याकुल बाटक माँझ,
सुमरि भऽ रहल जीवन क साँझ॥
कि जहिना वक्र सुधाकर गोर॥ कि तहिना ०००००
पिपासित आयब अहँक दुआरि
प्रेम पीयूष पियब भरि झारि॥
बधिक जँ बनत अहँक करवाहु।
तँ हमहूँ बनब विखंडित राहु॥
कि जहिना सुधा स्वर्ग मे थोर॥ कि तहिना ००००
सीखबि विश्वकर्मा सँ विज्ञान।
बनायब शकरी भील महान॥
भरब माधुर्य क कोषागार।
सेहन्तित भऽ जायत संसार॥
जेना कुसियार क पाकल पोर॥ कि तहिना ००००
बनब हम पुनर्जन्म मे चान।
चान सँ भऽ जायब चिरध्यान॥
पड़त जनि अहँक प्रतीक्षा-पात।
आलिंगन सँ लघ्य: स्नात॥
जेना हाल्दी लागल नव खोर॥ कि तहिना ००००

मऽरहल वर्ण वर्ण निःशेष।
शब्द सँ प्रगटल नहि उद्देश्य॥
मने मे रहल मनक सब बात।
अन्त मे पड़ल नवल जलजात॥
जेना आगू अलभ्या पित चोट॥ कितहिन ०००००
—०—
— बूच"

"गीत-५६
जागरण-गान" (प्रकाशित पू अक्तूबर १९८४)

असम वंग पंजाब गुजरात जागल॥
अहीँ टा पड़ल छी उठू औ अभागल॥
सुरुज लागि आयल निशा कें उसामे॥
किरण जागरण=ज्योति दसो दिशामे॥ ✓

खग-भृंग-नाग धरि निन जागल?
अहीँ टा पड़ल छी-उठू औँ अभागल॥ २॥

चिकरि हँसि रहल स्यार सिंहक दशापर।
चलल बकगणक, हंसपर क्रूर थापड़॥ 18
निठुर काककर सँ पिकक कंठ दागल 19
अहीँ टा पड़ल छी उठू औ अभागल॥ ३॥
विदेहक सुत क देह दुर्वह बनल अछि।
ग्रसित कऽ रहल मैथिली कें अनल आइ।
परक लेल दर्शन, अपन आँखि लागल?
अहीँ टा पड़ल छी, उठू औँ अभागल॥ ४॥
हरण कऽ रहल अछि हमर मीठ वयना॥
कोना कऽ सिखत आन बोली ई मयना॥
विवश अछि, वाघिक हाथ सँ छोर तागल?
अहीँ टा पड़ल छी उठू औँ अभागल॥ ५॥ 28
29
P.T.O. 30
31

कतऽ पितृ-स्वर आद्धि- कतऽ मातृ वाणी।
कतऽ जाऽ रहल जीह बचबु भवानी ?
बनब गोड़ ?- ई गुनि हमर प्राण पागल ?
अहीं या पड़ल छी, ठाढ़ ओ अभागल ? ॥ ६॥

बहुत भेल हे आब ककरो ने मानू ?
निकालि द्वारि प्राचीन तरुआरि तानू ॥
अहह आइ मे फागुन आग लागल ॥
अहीं था पड़ल छी ठाढ़ ओ अभागल ? ॥ 6॥

— ० —

— बुच

नचारी ॥ गीत-6

रचल पिया के गौरी बनलि जोगिनिया ॥
पुनि हर बाब वनब कनियाँ, गौरी बनलि जोगिनियाँ ॥
सती विरह शिव भऽ घरसँ वहल, कयल भस्म अन्वेषण केवल ॥
बनि बनि लावण्यक मोनियाँ ॥ गौरी ००००००
पर्ण-सलिल खा शो पुनि लागलि।
युग-युग पियतप मे लय लागलि ॥
मागलि योगेशक ननियाँ ॥ गौरी ००००
परखिल प्रीति रहल नहि झाँपल ॥
भेल प्रतीति सकल तन काँपल ॥
बहल नैन प्रेमक पनियाँ ॥ गौरी ००००

गौरक स्वर्ग, तलातल नाँचल।
उमा अमित महिमा नभ बाँचल ॥
जय हे कैलाशक रनियाँ ॥ गौरी ००००

— ० —

'बुच'

(49)

गीत - ४ (शेफाली) (१८ अगस्त के आया)

शास्त्र वैद - हम जे जनबै' छी।
काव्य वैद" - हम अैद - गबै' - छी ॥
परमहंसनगर मैथिल टोली।
सबसँ मधुरी देसिल बोली॥
कवि कोकिल विद्यापति कंठक हार अपन मिथिला॥
~~ओना बीच योग क निरमल संसार अपन मिथिला॥~~ छ॥.
सागकियाँ आइ गरीब - मुदा फकतै' छी
पथिया भरल मखान क लावा॥
बासमती चूड़ा सानल -
मिरचूड़ अमौर गलि औलनि बाबा॥
छाछिल
भरल चंगेरा चूड़ा, छाछिल ~~[illegible]~~ अपन मिथिला॥
~~ओना बीच योग क निरमल संसार अपन मिथिला॥~~ छ॥.
शान्ति गीतनाथ क संसार अपन मिथिला
जागो दीदी चाह बना बाथि।।
कमला बेटी पान लगाबाथि ॥
कोशी बहिना धान कुटै' छथि।
बागमती सिदहा फटकै' छथि॥

घड़ रक लक्ष्मी विहुँसथि साँझ ओसार अपन मिथिला॥ 20
~~ओना बीच योग क निरमल संसार अपन मिथिला॥~~ छ॥ 21
शान्ति या " — छ — — बूँच — ॥

26
27

(11)

Monday 22 • August 1983

"माला" गीत - ८

(प्रकाशित १८ मई १९८०)

सुरभित अहँक सिनेहक माला॥
जनम जनम जपि रहब बिस्पतर
राखु बन्न अपन मधुशाला॥ १॥

देवि, सुखक घर बांहि नं' हमरा।
मिलन क अलयो आहिन हमरा॥
हम नर, दुःख कारक धरतीपर,
अपने बनालि रहू सुर बाला॥ २॥
सुन्दरी, अहाँ आकाशी गंगा।
हम भूमि क प्यासल भिखमंगा॥
युगयुग बहु बौरायब मरु मे-
अहुँ आयब नहि पावन प्याला॥
सुरभित अहँक सिनेहक माला॥ ३॥
नहि शृंगार, रौद्र हुंकारे!
हम रहि [illegible] पार, अहाँ ओहि पारे
दुहुक बीच कठोर कर्तव्यक-
भरल अथाह भयंकर नाला॥
सुरभित अहँक सिनेहक माला॥ ४॥
-०- "बुच"

गीत –

(१)

हाइ अय, पोखड़ि एना सुनि नहाइ ॥
अहाँ छोट खाइ छमर, अपनउँ उभारि छमर
उचित तें कहि दै' छी आइ?
हाइ अय, पोखड़ि एना सुनि नहाइ ॥१॥

(२)

काढ़ु जकाँ उनटै' छी, माँछ जकाँ पुनटै' छी
रॉंप जकाँ गुड़री दहाइ ॥ हाइ अय.... ॥

(३)

आँचर धन नीपत्ता, तानल दूदू छत्ता ॥
मड़ौनी मे भीजै छथि माइ ॥ हाइ अय... ॥

(४)

बच्चा कें टकटकी, बौआ कें चकचकी ॥
बूढ़ा कें कऽगौलनि बाइ, हाइ अय......

(५)

केओ बाटहि कए बाना, बनल छथि दीवाना
चपचट मे करता' लगाइ ॥ हाइ अय.......

— ० —

— 'बूच'

गीत - १०

स्वप्न-सुन्दरी

स्वप्नसुन्दरी अहाँ जीवनक सहचरी।
निन्न मे अबि अहिना घड़ी कु घड़ी॥१॥

भोगभोगल गतेजे बनल कल्पना।
आबभऽ गेल आधि अन्तरक अनमना॥
दुःभ मानव अहाँ देव लोकक परी॥२॥ निन्न०

मास संताप दायी वसंती छटा।
आब उत्ताप दायी अषाढ़ी घटा॥
कोँर लागलि जुआयलि गुलाबी घड़ी॥३॥ निन्न०

रूप-अमृत पियाकऽ अमर जँ केलहुँ,
विकल विरहक खोआ फेर बीकऽ देलहुँ ?
प्यार मे जिंदगी ग्यर मौत क कड़ी।
निन्न मे अबि अहिना घड़ी कु घड़ी॥४॥

बेर बेरुक अहँक फेर अभ्यागतम।
आधि सदा सर्वदा हार्दिक स्वागतम॥

कल्प चाहक दुहु नैन मन तरतरी।
निन्न मे अबि अहिना घड़ी कु घड़ी॥

-०-

— "ध्रुव"

गीत — ११

सच्चय॰ अहाँ, मुदा छी सपना एहि जीवन मे
रहल जे सुख भऽ गेल कल्पना, एहि जीवनमे ॥१॥
बिहुँसल ठोर विवश भऽ विमुकल,
मादक नैन नोर कोर सपना एहि जीवनमे ॥२॥ सह जो०
✓ आदि के कतऽ, सिँगार सजाओत,
आश लोभ फल कर्मन क अपना एहि जीवनमे ॥२॥

दुनियाँ हमर एकान्त क गह्वर
भेल शीत मुरुत क स्थापना एहि जीवनमे ॥३॥ सह जो०
४ दीप बाति अहूँ बाति गढ़यलहुँ
धऽर हमर लोक क आगि तपना एहि जीवनमे ॥४॥
— ब — बूच ॥

गीत

अहँक लेल जेन, हमर भेल गंजन ॥
कहैत खेल ई, रक्त सँ हस्तमंजन ॥
तरुण नेह पर मात्र दुःख क सिपाही,
गड़ल देह हमर अहँक आँखि अंजन ॥
✓ स्वप्न गेल छल जे सुख क लोक सुन्दर,
चलल आदि प्रलय लऽ तकर सुधि प्रभंजन ॥
५ मृतक हम, अहाँ छी सुधा स्वर्ग लोक क,
अहँक लेल यौवन, हम गेल जीवन ॥
— बूच ॥

~~Tuesday 30 August~~

ग़ज़ल - १२

यार छोड़ह, परक प्रेम अधलाह छै,
तैं बिसरि जाह हमरा बिसरि जाह छै ॥१॥

मोहबाती जड़ा तेल नेहक भरह
दीपशिखा रूप कें सुनि हृदय मे धारह
कए देलह जिंदगी कें ई छड़डाह छै ?
तैं बिसरि जाह हमरा बिसरि जाह छै ॥२॥
छल मधुवन मे साँझक पहिल तारिका,
तौं फराके बनाबह अपन वाटिका॥
उठि रहल आबि आतेक आब्रवाह छै,
तैं बिसरि जाह हमरा, बिसरि जाह छै॥

हम विमल राम केर लोक संयोजिका॥
छी प्रबल गोप केर प्रेयसी गोपिका॥

धार छै उठि रहल आबि हमर नाह छै॥ तैं बिसरि.....

मोन कें शीत करि बंध मे लए चलह,।
लोक चर्चा करति हमरा छुबै पाथरह॥

हम तहू साथ बड़का नकल क चाह छै।
तैं बिसरि जाह हमरा बिसरि जाह छै॥

—०—

—'बूच'

 (16)

गीत - १३

नवनव पल्लव पर हँसलै' फूली कचनार गाय।
बूढ़ी महुओ तर लगलै' रसिक पथार गाय। ।।१।।
मलय बसात क मंतर पड़लै'
विपरल छै ई आम मजड़लै' ॥
चौबट्टी परका युगयुग छै,।
पाकी नव पनकी सँ भड़लै ।॥
पिक्की कें पिक कऽ रहलै' नुक्की उलार गाय।
बूढ़ी महुओ तर लगलै' रसिक पथार गाय। ॥.२॥.
बेली फुलियाबय कनैल कें।
बेल बुराबय रसक थैल कें ॥.
सीयो कऽ नव गठित गात कें।
गाछिया कऽ पछवा बसात कें ॥
रंभारानी कऽ लेलनि घोघे उघार गाय।
बूढ़ी महुओ तर लगलै' रसिक पथार गाय। ३॥.
झुल झुल पर फूल बनौलनि,
खूब मालती मौन मनौलनि ॥
गमगम कऽ उठलीह चमेली।
हँसिते चंपा छाउर गेली ॥
।विध वो सिम्मर पर लगलै' सिनुरी बजार गाय।
बूढ़ी महुओ तर लगलै' रसिक पथार गाय। ॥४॥

—०— — 'बुच'

गीत -१४

अजुकी दाइ

अजुकी हम दाइ छी ॥
आधिक अगुताइ छी॥.
आहाँ बाट ताकू, हमहीं विदेश जाइ छी॥.
राखि लियऽ अपन चूल्हि खापड़ि ई घऽर आँटि।
सौंप दियऽ अपने सँ आङन मे दीप बारि ॥

P.T.O.

311 MAAM. **Monthly Summary** 17

PARTICULARS	DATE

~~Sita pati Sri pati Baikuntha~~
~~PARTICULARS~~
~~Sermon on Savings~~
~~Omega Omega~~
~~Shivaji~~

अहँक चान खड़ड़ल ; हम लहरल सलाइ छी॥
अजुवी हम दाइ छी?
व्यर्थ भेल सिनुरदान, कोबा घर सुनसान?
टूटि गेल पिंजर-पट, पंछी भऽ लक उड़ान।
अपना पाँखिक कमाइ, गाछ चढ़ालि खाइ छी? –
अजुवी हम दाइ छी?

प्रियवा प्रियतर कहलि, प्रियतम तँ पाइ भेल?
सर्वोपरि पाइ तकर दिव्य स्थान आइ भेल?
तेँ नै एकसरियेँ हम अपने अघाइ छी—
अजुवी हम दाइ छी?

—०—

— 'कुंच'

गीत - १५

बिनु घनश्यामक बेकार हमर जिनगी?
धिक धिक जुआनी, धिक्कार हमर जिनगी?
मेवा सड़ि जाउ, फड़ल फूलो सब उखरि जाउ।
मधुवन जड़ि जाउ, नँदराज भवन पजरि जाउ॥
सुखालि जमुनियाँ केर धार हमर जिनगी।
धिक धिक जुआनी, धिक्कार हमर जिनगी?
भृकुटी पर क्रोध रेह, मौन मे भरल स्नेह

Maam.

(18)

SEPTEMBER—1983

Sita pati Sri pati Baikunthadi pati
Lakchhami pati pati Mam

SUN - Seven		4	11	18	25
MON eight		5	12	19	26
TUES Nine		6	13	20	27
WED Ten		7	14	21	28
THU Thirst	1	8	15	22	29
FRI	2	9	16	23	30
SAT	3	10	17	24	

There is a man whom I saw on the
Noxialbari

September october November and
December

माखन मन अर्पित छल, नोंक झोंक दहीदूह।
ककरा ~~[illegible]~~ करतै तकरार हमर जिनगी ॥ धिक्‌ ०००
चानी ~~[illegible]~~ पर कस्तूरी, एड़ी केसर कुंकुम।
माल‍ि मालि क्य बौंसाथि ओ हम तैं रूसलि गुमसुम ॥
करतै रहैन पैंत उलार हमर जिनगी ॥ धिक धिक ०००००
आगि जकाँ दागि रहल, चन्द्रमुखी केर उपाधि।
सोना सन देह अपन भसम करब योग साधि।
पड़ल गोवर्धन पहाड़ हमर जिनगी॥ धिक्‌ ००००००
भवसागर घाट पर क रानी घटवार ~~[illegible]~~! कौआ
कर्मक पुरान नाव, धर्मक पतवार ~~[illegible]~~॥ कौआ
प्रेमी बिनु के करतै पार हमर जिनगी॥ धिक्‌ ०००००
~~[illegible]~~

(19)

श्रीगणेशाय नमः

गीत - १६ ~~[illegible]~~ → 'बुझ'

धन्य रोसड़ा नगरक शांति निकेतन पीठ प्रधान।
~~श्रीवृन्द लक्ष्मीनारायण दूबाचार्य विद्वान।~~
~~कोटि-कोटि रामकृष्ण स्वामी दूनु [illegible]॥१॥~~
अतिथि गणक पद पदम जाहि ई भूतल भेल महान ॥१॥ 4 5

बीसम शदी नवम दश अन्दक अवसर अन्त अनूप।
सरस्वती विद्या क निकेतन, निर्मित निज अनुरूप।

धन्य दिवस-तिथि प्रहर काल छल धन्य भावना-ज्ञान।
~~श्रीवृन्द लक्ष्मी नारायण दूबाचार्य विद्वान॥ २॥~~
धन्य रोसड़ा नगरक शान्ति निकेतन पीठ प्रधान॥ २॥
सरस्वती ज्ञानक प्रतीक छथि, विद्या भाव क गंगा।
ज्ञान-भाव केर संगम सँ भ' जाइछ दुर्गति भंगा।

तीर्थराज केर सिंहासन लग राजित पाँचो प्राण ?
~~श्रीवृन्द लक्ष्मी नारायण दूबाचार्य विद्वान ॥३॥~~
धन्य रोसड़ा नगरक शांति निकेतन पीठ प्रधान॥ ३॥
कर्म भाव केर चँवर मनोहर, हरितोज्ज्वल अपरूप।
शिव आसन आरूढ़ जतऽ छथि, सचराचर केर भूप॥
स्वागत छम माधववत नहि एहेन मीत कयो आन ?
~~श्री लक्ष्मीनारायण माधवे सोहि मीत- के आन ?~~
~~श्रीवृन्द लक्ष्मी नारायण दूबाचार्य विद्वान ॥४॥~~
धन्य रोसड़ा नगरक शांति निकेतन पीठ प्रधान॥ ४॥
सा विद्या जे दैछ विमुक्ति से बनली आगारा।
कुण्ठारहित लोक बत ई वैकुण्ठक दैह नजारा॥
पीठक प्र
तपोनिष्ठ ~~[illegible]~~ तेजपुंज पद सँ दुःख सँ त्राण।

~~श्रीवृन्द लक्ष्मीनारायण दूबाचार्य विद्वान ॥५॥~~
धन्य रोसड़ा नगरक शाँति निकेतन पीठ प्रधान ॥५॥
P.T.O.

Saturday 6 • August 1983

कर्म-भाव-ज्ञानक प्रयाग में हमसब आबि नहाइ।
अछि उन्मुक्त क्षेत्र ई सगरो गबइ मोन हो जाइ॥

शुद्ध भाव सँ काज करी सभ, कऽ ज्ञानक आह्वान।
~~[illegible]~~ कृपाचार्य ~~[illegible]~~॥
चान्य पिजड़ा नाम शान्ति ~~[illegible]~~ निकेतन पीठ प्रान ॥६॥
बुच

श्री गणेशाय नमः

मातृगीत - पृष्ठ ९६

जननि, अर्हत प्रतिनिधि पदपूजन,
कोउ हमरो उद्धार अछ?
मौन जहाँ धरि अधिवेशन मे—
कथलनि कोने उत्सर्ग अछ? ००००००।
[illegible] दुःखक बा थापड़ देहहुँ हम
[illegible] लिपलहुँ अपमान अछ,
सांस्कृतिक बात एकान्त कोन माँ, [illegible]
प्राणो लेबो आहत अछ ।।०० जननि —

माइ मिथिलाक वाणी नहि चाहिये
आतंक उत्पन्न अछ, (आतंक)
पतनी बहाबि बनाबि बैतरणी,
नर्क हम संस्था अछ ।।००० जननि —

पाप प्रयोजनीय, पापेश्वरी
हमरो पाक विसा अछ,
देखि लिख जैना पशु कै
एक अही आधा अछ, ।।०० जननि

— ० —

२१

Monthly Summary

स्वागत गीत - १२

PARTICULARS	DATE
अभ्यागत अति सम्यक स्वागत करौं हौं।	
नयने उमड़ि, हृदयासन धरौं हौं॥ १॥	
अपने हीं आमंत्रण, ~~[illegible]~~ हमपर्या भरला हौं।	
अपने अमृत समुद्र, हम क्षुद्र प्याला हौं॥	
अपने चैतन्य किन्तु [illegible] जड़ता अहि, हमरा मे-	
अपना विमूढ़ता पर लाजे मरौं हौं॥	
अभ्यागत अति सम्यक स्वागत करौं हौं॥ २॥	
तमसँ प्रकाश दिसि, इन्द्रियेने चलियौं,	
मरणशील प्राणी [illegible] अमृत देने चलियौं,	
नेति नेति कहिकहि कऽ सतत गुणगान करब,	
जड़ता मगाँ छोड़ि पैर पकड़ौं हौं।	
अभ्यागत अति सम्यक स्वागत करौं हौं॥ ३॥	
पावन हम कोना शरण, अपने उत्तुंग काय स्वयम्	
गौरवगिरि, हिम क्रिडा हृदय ~~[illegible]~~ हृदय-	
अवतरण क शैली में उद्देश्य साहचर्य देत-	
गीतागुनाउ अहाँ - हम हटौं हौं।	
अभ्यागत अति सम्यक स्वागत करौं हौं॥ ४॥	
अहाँ सांख्य दर्शन हौं, हम तँ विषाद योग॥	
अपने [illegible] अनुभूत पुरुष हमरा ~~[illegible]~~ अवमय करौं	
अहाँ हौं आकाश [illegible] हमर पाताल वास -	
अहाँ ज्ञान आलोकित, हम उद्दौं हौं।	
अभ्यागत अति सम्यक स्वागत करौं हौं॥ ५॥	

25 श्रीगणेशायनमः (22)

MONDAY ● NOVEMBER ● 1985

गीत - १✓

जीवन पहाड़ भेल, प्राण तनक भार भेल
- एक सूर्य वंशी विनु दिवसो अन्हार भेल ॥१॥ जी०

- मुरलि ही भजन भाखि, व्यासहि ही प्रेम चाखि
ताकी हम प्रियतम कें आँखि मुनि थाकि [redacted]कि
विरहानल [redacted] धार भेल सोन जड़ल छार भेल
- एक सूर्य वंशी विनु दिवसो अन्हार भेल ॥२॥ जी०

आउ नाथ शीघ्र आउ, [redacted] क डंका बजाउ (पुनः)
नाँची हम आगि बीच, अहाँ पानि कें बन्हाउ
पवन गगन [redacted] पार भेल, धरणी-धर ठार भेल
- एक सूर्य वंशी विनु दिवसो अन्हार भेल ॥३॥ जी०

अपने करुणा निधान, कोमलचित अति महान
प्रियदर्शी प्रियतम [redacted], हमहीं छी भोलि आन
नोर क दहार भेल, काजर दहि धार गेल
एक सूर्य वंशी विनु दिवसो अन्हार भेल ॥४॥ जी०

धन्य छथि कपीश भक्त, भावक ज्ञानी सशक्त
अजर अमर गुणनिधि भऽ, रघु प्रभु पदानुरक्त
बूड़ल उद्धार भेल, वानर पतवार लेल
एक सूर्य वंशी विनु दिवसो अन्हार भेल ॥५॥ जी०

—— ❀ —— —

कमल कोटगाम ग्रुप
२४।६।८६

अपने प्रभु श्री ... सोहल, ~~...~~, अधिक भगत होना चाहिए
... संजीवनि ... दिये,
... दिये।
...

(23) 11

TUESDAY • JUNE • 1985

श्री गणेश शरणम

गीत - २०

हमरा पर तमाम दुरगंजन, अपने ही महान दुखभंजन
हे हनुमान,
हे हनुमान अथाह धार से पार कर दिहऽ
उद्धार कर दिहऽ, हमरा पार कर दिहऽ ॥

हमहीं पतित पुरनका पापी, आपलेउँ शरण कलपे संतापी,
हे कपीश,
हे कपीश हाथे धऽ हमरा ठाढ़ कर दिहऽ,
उद्धार कर दिहऽ, हमरा पार कऽ दिहऽ ॥

उ जन स्वर्ण क पुरी जड़वलऽ, सज्जन पर [illegible] रतन जवलऽ,
महावीर,
महावीर हमरो पर करुणा विचार कर दिहऽ,
उद्धार कर दिहऽ, हमरा पार कर दिहऽ ॥

छोड़ब नहि अपने के आसरा, देत रहब टेक हो...
महामंत्र,
महामंत्र के हमरो [illegible] दि...
उद्धार कर दिहऽ, हमरा पार कर दिहऽ ।

12 [illegible] श्री[illegible] [illegible]

WEDNESDAY ● JUNE ● 1985 गीत - २१

शावरी को [illegible] कड़ना,
[illegible] आवि [illegible] अड़ना ।।
[illegible] [illegible], नीर नैन [illegible]
[illegible] ऑचरीए प्रभुक पै [illegible] ।। [illegible] आवि ....
[illegible] गीत
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible], अहँक [illegible] ।। [illegible] आवि ....

[illegible] [illegible], [illegible] जीवन [illegible],
[illegible] [illegible] आव अहाँ मोर [illegible] ।। [illegible] आवि —

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
अँ[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।। [illegible] आवि —

১. দুবাহু আদায়ী - নাহুলী - নিজেহ!
২. মোর মোহখড়ি মোর মুখুলিয় - মুখে } দুই হাত
৩. মানুষখাওন - চাকরিখাওন মহি।

IJKL

Name & Address | Tel. No.

গীত - 23 (24)

সীতা-দেব- তাতে বাগান লেখলি
মাঁ, মেঁকে দী-হি কী বেলাতে?
সিঁদুরাদি কাতোরি বাঁধাবলা,
কুহী মা চন্দ্রবাহ ভেলাতে॥ সীতারে০০০০০
মারো মেঘ, বিকল, ভাঁগ দাখি,
ঘুরত কাতো দে হলাতে॥ সীতারে----
কুঁড়ো মাথা শ্যাম লেগালে
নৃপদুলাবিম্ব দকোক গলাতে॥ সীতারে---
ঘহ ঘহ ঘাট, কত প্রবাহ দাতি?
মাজে মেঁ হি কী মেলাতে?॥ সীতারে---
বাণী বজা, বিপিন কাল দাখি,
কুবচ জলো নাথ মিলাতে॥ সীতারে---

3.62
০২
8.04

বিত পাদি পশু পক্ষী প্রমোদবন
প্রদেখাঁ মিলি তান আগতে তোতি॥ সীতারে---

ইতি

হাতে	৭ বাজে
ফোমল- ৭.৫০	২০.০০
খেপ - ০.২৫	~~৫~~.০৫
১২বজা - ০৫০	৬.৩৫
২বা - ০৫০	৬.৩৫
৭দিন - ০২৫	৭.২৫
২.৫৫	০৫২
	৪০৫৭

= ৪৩.০২

श्रीगणेशायनमः
ॐ

16 (२८)

SATURDAY ● NOVEMBER ● 1985

गीत - २४

राम सँ मधुर मंजु राम सँ सुखद,
शांति- मँगल भरल, गुणग्राम॥
श्री राम जयराम जयजय राम ॥१॥

एक स्वर्ण छत्र, एक मुकुट क मरकत मणि
वाणी महारानी के मालक किरणावलि बनि
छिटकि रहल भूतल-पताल स्वर्ग सुर लोक
विंवित ये वैकुंठ धाम ॥२॥ श्री राम०००-

जाहि नाम कें जपैत प्रथम पूज्य श्रीगणेश।
मुक्तिक ई महामंत्र बाँटथि काशी महेश।
जकरे महिमा धोधि सतीरत्न शैलसुता।
शोभित शिवक अंक वाम ॥३॥ श्री राम —

काठिक कपट काल नेमि, नाम सुनैत महावी
अगणित ~~[illegible]~~ प्रह्लाद हेतु, ~~[illegible]~~ नवनं नरसिंह भी
विधि हरिहर, कर्म ज्ञान भक्ति सकल नामहि मे
~~[illegible]~~ ॥४॥ श्री राम —
नामहि मे बसल तमाम।

स्वाद तीर्थ सरगतिमय, नाम सर्व भुवन भुवा
एकौ से वाति गेलइह सोके तौ ई वडभा।
जीव ~~[illegible] की बात~~ पतित पाप तक तरि गेलइ जाइछ
जंगल की (माया)
जकरा ओ समुद्र भवन ... ॥५॥ श्री राम

२०/६/८५

Sun 17

श्रीगणेशायनमः (26)

गीत २५

12

TUESDAY • NOVEMBER • 1985

गप खुशबू २

बाबा माछ खाबू, नाना घी कराउ खाबू गय!
पप्पा के हीयालग नानी मारै टाउ खाबू गय!
बाबा खाहि चाह दस गिलास, लऽकऽ लेवनी नाना पास
नानी चुनका ठोरी बान्हि बान्हि ऽ माउ खाबू गय॥

बाबा लैलनि मोंछ बीन, नाना खेलनि मुर्गा तीन
नानी मनसा था के लेगा हदउ घी नज खाबू गया।

बाबा बाँचथि वेदपुराण, नाना पढ़थि ने बाज कुरान
नानी मुल्लाजी से पूछि रहउ हाथी घन खाबू गया।

नाना मोरे अल्ला वाहिद, नानी साँझ पहुँ चलि आयल
ई सभ कहथ समले विधाता आनंद खाबू गय।

-८३.५४ = ३६६०१२
-८३.५४ = ३१६०.१५ — ०६५५४१। लं-१।६।८६
x— = ६००.००

(27)

12

SATURDAY ● JANUARY ● 1985

गीत - २६

हमरो नेता सतेन्द्र महान २
हाथ छापेऽऽऽऽऽ
हाथ छापेपर करु मतदान
हमर नेता सतेन्द्र महान ॥ ....

अप्पन गेहेने छथि, आनक नहि देने छथि
जीवन सम अर्पित समाज लेल कैने छथि
पातर के ऽऽऽऽऽ
औ पातर के वएह सरकार आन ॥२॥ हमरो....

धुसक नहि तो। ना जायत नहि बौआ छनि
सेवा ले हरिदम तैयार बौंहि जोड़ने छथि
समाज ऽऽऽऽ
हिनका सामने तँ नतमस्तक इमान ॥३॥ ह—

Jun 13

जाति-पाति भेद मेटा समदर्शी छथि
बहुते सिनेह, हिनक हृदय स्पर्शी छथि
ककरो की ई ऽऽऽ,
ई ककरो की गर्व छाडि आन ॥४॥ —

हिनकर निःस्वार्थ सेवा पाबू औ
भाइ बन्धु [illegible] आबू औ
जुनि [illegible]
[illegible] आन ॥५॥ हम—

गीत -२६ (28) 24

THURSDAY • JANUARY • 1985

नव मासक जीवनक मारे
कपड़ाह ~~बहु~~ कष्ट जेनीसँ
हमरा कोखक तारे मोर्ले
लागल प्रियतम चाहक चुस्कीसँ
फाड़ि देह वह आइ मनन
हम तौं देहक पन गाबी ॥२॥ अम्ब०००

क्षीणा पुण्य अछि, जीव वकट
हम आइ आगतमे मराके रहल छी,
हे दोबह तपातीमे [illegible] -प्रति
पाप-लोभि मे लोटा रहल छी,
चौंधियाइ- ~~[illegible]~~ चैनित पातालक आब है,
देवि मैयावहु भीषण भावी ॥ द अम्बर —
हे गंगे! (+)

कहत के प्रिये, आब-
ककरा सँ पूछू?
कतऽ आछि हम - हिमशिखर -
~~[illegible]~~ साधनालय?
जमल- भावश्रृंगार,
विकल श्राव- सपिता,
विद्याके चलालि योगी
बाप क हिमालय ! ॥३॥ कहत क

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गीत - २८

श्री गणेशाय नमः

हम अपना बहु कें
सबसँ बेसी मानै छी॥
ओकरा खातिर भोरे उठिक'
सबसँ पहिने सबहा पर सँ
दूध ढौना आनै छी।
हम अपना बहु कें,
सबसँ बेसी मानै छी॥१॥
ओ प्यड़लि प्यड़लि पीबैए'
हम प्रेक प्याली मे पहिलुक
चाह लीफ को छानै छी॥
हम अपना बहु कें
सबसँ बेसी मानै छी॥२॥
ओ चाहि जाइए' नैहर तँ हम
राति राति भरि जागि जागि-
कैप' हरि काटि क' कानै छी॥
हम अपना बहु कें -
सबसँ बेसी मानै छी॥३॥

श्रीगणेशाय नमः

गीत - २५ गति - २५

तन पर कर्मक कामर भार
मन मे भक्तिक ~~[illegible]~~ भाव उभार
ज्ञानक पंथ पकड़ि कमरथुआ चलु ~~भगवान के नगरी~~ बाबा के नगरी ।।
पुलकि पुलकि कऽ गाबु बम बम
डुलकि डुलकि कऽ नाँचु छम छम
डेग डेग पर ताल डमरुआ
बजा बजा कऽ श्वास क सरगम ।।
देखु कतहु छिलकय नहि गंगाजल गगरी ।। तन पर कर्मक....
माड़ि लियऽ वैराग्य क सम्बल
टाङि लियऽ संयम केर कम्बल
चलु शीघ्र दर्शनक आश लऽ
हृदय सहज श्रद्धाक बास दऽ
माथा पर कसि कऽ बान्हु विश्वास क पगड़ी ।। तन पर कर्मक....
देखु जह्नु महर्षिक गरिमा
भागीरथ कयल जिनक परिक्रमा
व्याकुल बैसल छथि गोहारि पर
जनमि गेली जाह्नवी धारि पर
नाँचैत ठाढ़ि भेली, कहरनि तरंग क घह[illegible]
देखिऔ हिनदिसि चलु उत्तरवाहिनि
सकल पाप संताप क ग्राहिणी
यद्यपि अपने सद्यः जाता
तद्यपि सकल लोक केर माता
पहुँचाबु हमरा जल्दी शि[illegible]क अगारी ।। तनपर....

— [signature]

श्रीगणेशाय नमः

गीत- ३० परम

अधरहास करतल कर वीणा, हंसवाहिनी ~~धवल~~ प्रवीणा,
श्वे० अम्बरे परे शुद्धि दे, अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे॥

भव का सार, विश्वास का शतदल।
पद-पातल-प्रदूषण-परिमल॥
हस्त स्फटिक माला मनोहर
सहज तपस्विनि आत्म शुद्धि दे॥
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे॥२॥

आत्मीक कल्पना हंसपर,
पद सौन्दर्य क पंकवंश पर।
व्योम नापिके, कथा गायिके,
हृदय हमरो कुण्ठा वर्जि दे।
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे॥३॥

सींचू ज्ञान-कमण्डल-जलसँ,
पोछू माँ प्रेमक आँचलसँ।
उक्ति द्वार पर रंजाहार
करबू लोग युगयुगक वृद्धि दे
अपरे परमेश्वरि सुबुद्धि दे॥

—०— —— बुच

गीत- ३१

माइक चरण-कमल लालें लाल गय,
भाल अरुण फूल ओ चानन,
उड़िँ लेक परिमल लालें लाल गय॥१॥

श्यामल तन आँ पलू मौरक बिच,
बिहुँसल अधर विमल लालें लाल गय॥२॥

सोहे खंजर, लाल खप्पड़ आदि,
वरदायक कमल सोहे लोचनमा ॥३॥...
दयाद्रवित विगलित छतिया
मुण्ड माल लटकल सोहे लोल गरदाना ॥४॥...
उर सुमेरु उमड़लि पयस्विनी,
पुत्रक खुन चुअल सोहे लोचनमा ॥५॥
ममतामय मन, भयदायक तन,
मधुकालिका नाम कामरूपमा ॥६॥

— ० — 'बुच'

गीत — (32)

स्नान कय पिया के गौरी बजलि जोगिनिया ॥
पुनि हर वरक बनल कमनियाँ ॥१॥
सती विरह शिव भरि घर रोवल
कयल भस्म अन्वेषण के वश ॥
बनि बनि लावण्य का जोगिनिया ॥ गौरी बजलि जोगिनियाँ ॥
पर्वत खिलल रवाई पुनि आनलि ॥
युग युग पिय तपमे लय लगाति
भगावति योगोयता मितियाँ ॥ गौरी बजलि जोगिनियाँ ॥ ३॥
पुत्रिक प्रीति रहल नहिं आँचल
मेल प्रतीति सकल कामना पल
बहल नैन प्रेम का पनियाँ
गौरी बजलि जोगिनियाँ ॥४॥
गौर का रूप तरल तल आँचल,
उमा अजित महिमा गावे आँचल ॥
जय है कैलाश कामिनियाँ ॥५॥

० ——— 'बुच'

गीत 33 पृष्ठ (1)

लेखा कहियौ ने भेजुआ अपनउं बुझिनै कहुतो दूर।

आंगनमा अपना क फूल, एड़ी गड़ल मधुरक मूला।
हमहूँ पूत अहींक छेक माँ, अपने तें आंगन क आंगहीम।
अध्यक्षन आ हमरो माँ, अपने सबहक अपनेआ ही॥
हे माय का मूरतमोम अभिषेक धड़कन रहना था।
शुभ्रकीर्ति माँ दीपकाली कोर मुरत। माँ लौटेह।
माँ अपने लग पुरा सोना-चानसँ पूत नो चौकेह
अहँ क हाथ नवरत्न, हमर जीवन व्यर्थ ना घर मेँ आ
[illegible] ... आनन
[illegible] मेंहि, आकाशि डेहिया माति पकड़ कर जानि भोग को [illegible]॥
[illegible] [illegible] ... ॥ ४॥
[illegible] उषा किरण [illegible] ॥ ४॥
[illegible] — कुच।

गीत — 34

सिन्धु शैल - झूमि उते सीते॥
प्रेम हम मलीन, माँ पुनीते॥
ओंचरसँ झाड़ि दियउ
काहे पुचकारि दियउ
[illegible] पूत हम मलीन॥ ... ...
आधार [illegible] जीवन [illegible] गेनता।
[illegible] शांतिक [illegible]
[illegible] पूत कहे?
[illegible] ॥ ४॥
[illegible] आजु आजुसं [illegible]
[illegible] दिपति धरा, हिरवायु आएल हँसी,
[illegible] उपमोमे
[illegible] — कुच

गीत (६) ३५

मानौं ही [illegible] रघुवंशी [illegible] अहीं [illegible] औ,
[illegible] लेकिन [illegible] ही [illegible] औ ॥१॥
आपन के [illegible] माता सीता [illegible] गाता
[illegible] श्याम [illegible], [illegible]
आपने [illegible], [illegible] औ ॥२॥

[illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] रहत [illegible] [illegible] औ ॥३॥
[illegible]

[illegible]
[illegible] औ ॥४॥

[illegible]
[illegible] विचार [illegible]
[illegible]
[illegible] सीता [illegible], आपन [illegible] औ ॥
[illegible] ही [illegible] औ ॥
[illegible]

गीत (६) ३६

[illegible] आवध [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible] पति पति [illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥५॥
[illegible] ॥५॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

गीत 36

देखैं गाम, धाइ आइ अपना के ई हालहुँ॥
रानी जिनगी आ राजकुमारहुँ॥
कौशल्या माता कैं लागल बैसल छैक।
कैकेयी आगि रहाइ पड़ल अपमान के भार॥
जानकी बिना, कहिया नहि लोचन लोरहुँ॥
श्याम आगा लागि गेल, लोहू के धारि मेँ,
लोक बड़ दिखल नहि पिता गरमीन कें,
एक लोरिया लाल जीवन जगालहुँ॥ देखैं गाम धाइ आइ......
[illegible] कानि कानि, एक [illegible] कानि कानि?
[illegible] मूर्ति धारैहुँ -- देखैं गाम धाइ आइ......

— ध्रुव

गीत 32

— चैती भजन!

उतरल अँहक चरणमा, हे दुर्गे, मइया भवनमा......
सिंहवाहिनी [illegible] पधरनमा हे दुर्गे,
पंछी गावय, पात बजावय,
~~[illegible]~~ मोद मगनमा हे दुर्गे मइया भवनमा......
[illegible] मन, [illegible] तन,
[illegible] महल वरनमा हे दुर्गे- मइया भवनमा......
[illegible] सिंहासन, दिव्य आभूषण,
[illegible] गगनमा हे दुर्गे - मइया भवनमा......
बलि जाती, माँ महरानी,
[illegible] भवनमा हे दुर्गे मइया भवनमा......

— ध्रुव

গীত - (১৩) ৩৮ পৃষ্ঠা

অথ নাচারী

[illegible]

[illegible] ॥৪॥

[illegible] ॥৫॥

গীত - (১৪) ৪০

[illegible] ॥৭॥

[illegible] ॥৪॥

मरैया डोरी

असली डोरी काढ़ि विच, आँचल छल नेहरा।
आइने डूबल घर में, साड़ी भानल चडर॥१॥
कागुओ ईं भ गेल अछि, आधिर नीक भरवादि।
बूढ़ी पत्नी बेद बस, कोरा के नव सादि॥२॥

अपने ही परदेश में, हम ही बान्हे घडर
यौवन रखने विद्रुगन, देह काय पर धडर॥३॥

प्रेमक जाल नेपालहुँ, हूरल अछि चलि आढ़।
चौते में बुड़ल पिया, थीथु नहि बमबाउ॥४॥

डिम डिम ढोलक ढूँसेँ, छिटकल देहक पानि।
उजरकेश अबीर तर, बुढ़िया भेलि जुआनि॥५॥

हमँ भी उड़िथि अकाश मे, पच्छिक गोलपताल,
धरती पर नेता लोकनि, फहरहल रङ ताल॥६॥
मैथा पैरे पानिमे, गेड़ चुडा हमगुम।
पाँउ ठेल पेन कारबार मे, मारल बुर गाडूम॥७॥

टूटल बहुआइ आघन, खसल गामे उतान।
सगर बाली की चाम, पगड़ि बचौलनि प्राण॥८॥

—— कुँचे

गीत ([illegible]) ४२

बिनु घनश्यामक बेकार हमर जिनगी।
धिक धिक जुआनी धिककौ हमर जिनगी॥१॥

मेवा सिंगार, फल फूलो सेज उजारि गेल
मधुवन गाड़ि गेल, नंद राजभवन पजारि गेल॥
यूरेखलि जमुनियाँ कें धार हमर जिनगी॥
धिक धिक जुआनी - - — - ॥२॥

भृकुटी पर क्रोध रहै, मौनमे भ्रकुटि सिनेहक
माखन मन अर्पित छल, नैनक नोंक दही देह॥
ककरा लग कहै तकरार हमर जिनगी॥३॥ धिक धिक जुआनी....

चोटी मे कस्तूरी, एड़ी कोर कुंकुम,
माथि माथि क बाँसुरि ओ हमरें रहलि गुमसुम।
कत्य रहैत यौ तें उजार हमर जिनगी॥४॥ धिक धिक जुआनी
आँखि जकाँ राग रहल चंद्रमुखी के उपाधि
होइत छल अपन मरम कहब जोगसाधि॥
भ्रड़ल गेल धिन पहाड़ अपन जिनगी॥५॥ धिक धिक....

भवसागर धार पाकल गाली धरवार अहँ॥
कोन क प्रण नाव छानि पतवार अहँ
प्रेमी बिनु के कहैत पार हमर जिनगी॥६॥ धिक......

बुँदं

गीत-(१३)   पृष्ठ-(४०)

कानरोहि सुनु भगवती, श्यामसँ मथुरा निवासी,
मूड़ धुन कनु सन्यासी, चलैचलु गोकुलहिं काशी ॥१॥
[illegible] मेघ मुकुंड, लगबू मरमक तिपुंड
राखू मोती क हार, पीहि [illegible] माल झुंड,
जागमि कौन छीपैक दासी, हरक हँव एकान्त दासी,
दही दूध पड़ल आइ, माखन जोड़ि रहल आइ ॥
नटवर पीत चोटि, वटवट कँ क जोटि ॥
जीवन फुल कुसुम अकाश, आज गेल मधुवन विलेश ॥३॥
लेक स्मरण आब, कयरहलैं, दुरु घाव ।
बाहुल रेशमी डोरि ॥
भूलि उ चिन्ह तोरि : लटकि चलू लगा कंठ फाँसी,
कि डूबि मरव गङ्गा की नाशी ॥

गीत सं०-(१४)

घुरल आब अवध कहियत नगर नागरि
कुड़ल नाव देवु नही कात लागल ॥१॥
[illegible] अभिमान हमर छंगार अर्पित, नाथ अरहल छोथि मगन [illegible] तितिपित।
[illegible] हृदयनाथ अनुराग जागल, कुड़ल नाव देवु नहीं कात लागल ॥२॥
[illegible] अतिक रहल लगन [illegible], प्रणयकंठ गीता नृपति प्राण प्रीता
[illegible] काजरागि क पुट प्राप्त जागल, कुड़ल नाव देवु नहीं कात लागल ॥३॥
[illegible] तीनु जननी नयन नोर सींचू। सुनु कैकेयी त्याग उपरिताप सींचू ॥
[illegible] प्राण बहुरल पुन: गातलागल, कुड़ल नाव देवु ००००० ॥४॥
[illegible] नवविवाहक छुटायल, हुलसि आइ पनकल निहीहिकय [illegible] लायल।
[illegible] आदि आपन, विरह प्रेम पागल, कुड़ल नाव देवु ००० ॥

बुच्चे

गीत नं०-(४५) ४३ पृष्ठ-(२९)

रहतौने हारब, बाढ़ि जेतौं बिलाय जाय
दुनियाँ जिनगीसँ हेतै निपत्ता जाय।
आमक तँ गाछ, मुदा खबरि जागल छै।
मोहक अँगनामे प्राण फिरि पागल छै
चलि गेलौं सुनें कंठ लागलि पियासे जाय ॥२॥ दुनियाँ ....

बालपन काल चलि गेलौं वृद्धावस्था एतौं
गुनि गुनि कऽ कहैं जाय तकर-बाद की हेतौं ?
कहियो चाटि कऽ सकबैं पर घर मे बालजाय ॥३॥

बालवृद्ध जाइत छल, नव नव युवक चलल,
बूढ़ बूढ़ ठाढ़ि ठाकि [illegible] गलल॥
तैयो छौ आपन पर [illegible] बिसरायजाय ॥४॥
आपन कैं चीन्हैं तौं नाम तोर होत बाड़
[illegible] मेखर ग्य मुँह छौ मलीन आइ
देश कोश किछु ~~[illegible]~~ कोरि रहतैं प्रवासजाय
दुनियाँ क जिनगी ....॥५॥

'कुच'

गीत नं०-(४६) ४४

सीता कें सितिया बनौलक सौभाग्य हमार
रघुपति कें महलक कौशिक [illegible]
मिथिला को धाती आकाशौं छै ऊँच जाय
जागइये उजोतिर दाइ-
जाय प्रतिपालम रामे जमाइ ॥१॥

[illegible] मिथिला अनि जनकलि कनकक कन्या, जकरासँ तिरहुत की अवधो
[illegible] धन्या। को नरपतवंती लै उँवलछेल तोर लेल, वाले [illegible]
[illegible] आइ॥ इहो बातमन मोन पड़ल आइ॥२॥
[illegible] कैसन कोण तुच्छ-इन्द्रआसन छल, ताहि ल्याडि योगासन पूर्ण
[illegible] छल। भाँत भाँति छिन्न कोप जनकक जात कऽ उनटैं।
[illegible] सेवा करैत आइ॥ वाजैका नं १ दिग्गजै जमाइ॥३॥

गीत सं०- ४५

चमकि रहल चकमक औ, गह्वर जननी केर।
देखिते दूरलमक औ, गह्वर जननी के॥ १॥
जुंबज गगन दिशा देखाउ अछि, पँछबनि क्य ठाढ़ काल अछि॥
चान पुलकाधीपक औ गह्वर जननी केर॥ २॥
पहतलपड़ल स्वयं शिवशंकर - नारायण सुतल सुडौंडधर -
सिद्धि आकुल ठकमक औ गह्वर जननी के॥ ३॥
जगमग गंगा चन्द्रकूप अछि, उषा किरण ओढ़ल अनूप अछि
सकल भुवन पूजक औ, गह्वर जननी के॥ ४॥
रूप स्वरूप सुधा चरण सँ चूबये,
वरदहस्त कुंत- मस्तक छूबय
कलप्रकाश परिपक औ॥ गह्वर जननी ....॥५॥

ध्रुव'

गीत सं० [illegible] ४६ (+)

सूतलि बतदिया मैया, लागल केवाड़ गय।
जागह जागह हृदय कहिया कर हहउर घाट गय॥ १॥
मधुकैटभ, महिषासुर घातिनि, धूम्रनयन चण्डादि निपातिनि
बीजक शोणित सुरा पायिनी, शुंभ निशुंभक्य शांति दायिनी,
भक्त के अपराधहिं, अजहुँ अहाँ गय।
जागह जागह हृदय .... ॥२॥

दोन्ये मंदिनि, अतिभयंकरे, रक्तदंतिधे माँ अयोनिजे।
ताकह हे सताक्षि संतति कें शाकम्भरि मैया दुर्गति कें॥
तोरे सँ मेटैतछिया दुर्गम संहार गय॥ जागह जागह......॥ ३॥
भीमे भ्रामरि असुरमर्दिके, अरुण नाशिनी साधुरक्षिके।
अत्याचार बढ़ि गेल छैन्हि, रक्षा भार अहीं पर रहैन्हि॥
त्रिशूल, उदयौन चण्डिका, ओ एक अवतार गय॥ जागह जागह॥४॥

गीत नं० 46 भगताउम?

साधना - भावना-
आँधी —— गुद्दा
साधना क गंगा मे चलतीह-से-
चलिते रहतीह आ-
बिनु धूरल सागर मे समैतीह!
ई छल भगीरथ प्रयास
हा? हन्त?
साधना क सेहन्ता क ई अंत?
इहि गेल भावना क गाछ
जे नहिएँ गा सकल
भरल रहल ओ आदर्सँ सदाचार
सिनेहक मंजरीमा पर रक्को घुरल
सुअबसर पाबि घुरल

आतप्रिया सँ —
अंगालाभ की हैतैव ककरौ?
भऽ गेलहि अंगो कैं
मगता लाभ अर्थात विद्या पति लाभ?
— बुच

अध्याय - (2)

विचार मूलक भावना.

गीत सँ० - 42

[illegible] परक प्रेम अधलाह है,
तैं बिसरि आह हमरा बिसरि आह हे ॥1॥
दीप बुझि रूप कें [illegible] धरहे।
[illegible] जड़ा तेँ नेह क [illegible] ॥
[illegible] हे ॥ तैं बिसरि आह ....॥2॥
[illegible] मधुवन मैं साँझ क पहिरु [illegible],
[illegible] बनावह अपन [illegible],
[illegible] अहाँ के आब [illegible] हे, तैं बिसरि आह ....॥3॥
[illegible] राधा को [illegible], [illegible] प्रकार [illegible],
[illegible] रहल अहाँ हमर [illegible] हे, तैं बिसरि आह ....॥4॥
[illegible] गीत करियैय मे [illegible] ध्रुवपद आहा
[illegible] चाहहो, तैं बिसरि आह ....॥5॥
— बुच।

गीत नं० ४९

भादो भयावन छै सजनी, कोना पहपार हम करबै।
पड़ल छथि भार छै सजनी, कोना पठाबक हम घर बै पथ
बनाबि हम रूप के सजनी मुहाँ पर सिंगारि नहीं,
आड़ लगाबा छै सजनी, कौना इजोत हम करबै पथ
सुनसान बन पहाड़ लागत धुकधुक करैछै
आड़ पर इक ठाढ़ छै सजनी कोना इजोत हम करबै पहुँ
लागे छै बौछि के दोसर खुआबी कोन्हि बीचै,
मुहँ बुझा छै सजनी, कोना बसाय हम करबै
कहुँ धारि आ हम रेखी, रवरल कारी आ नीचाँ
गहन अन्धार छै सजनी, कोना मोन जाइ हम करबै ॥
बूच

गीत नं - ② ५०
धान मँगा संसार लागि गेल,
एहि ठाँ दुखक पहाड़ भरल अछि।
नोरक निर्मल धार बहि गेल
असहनक दहाड़ चलल अछि।
सबक बर कहुँ कोना आबवैं,
हम अपने में बुझि रहल छी।
हँसि सबक कहु कोना आबवैं,
हिय हारि मोने बुझि रहल छी॥

গ্রন্থ [illegible], [illegible]

=২৮/-